International Indexed & Referred Research Journal, March, 2012. ISSN- 0975-3486, RNI-RAJBIL 2009/30097;VoL.III *ISSUE-30

शोध पत्र- हिन्दी

प्राचीन भारत के सांस्कृतिक उपनिवेश (सदंर्भ आकाशदीप कहानी)

March, 2012

* प्रेम सिंह मीण

* प्राध्यापक, राजस्थान कॉलेज ऑफ आर्टस, जयपु

यह पुष्ट है कि प्राचीन उत्साही भारतीय विदेशों में व्यापार, वाणिज्य और धर्म–प्रचार के लिए गये तथा अन्ततः राजनीतिक सत्ता स्थापित करने में सफल रहे। "अशोक के अन्यतम पुत्र कुस्तन द्वारा खोतान में भारतीय बस्ती बसाये जाने की बात तिब्बत की ऐतिहासिक अनुश्रुति में विद्यमान है।

कौण्डिन्य नामक ब्राह्मण के नेतृत्व में बहुत से भारतीय 'स्वर्णभूमि' गए थे और वहाँ उन्होंने उस उपनिवेश की स्थापना की थी, जो चीनी इतिहास में फूनान के नाम से प्रसिद्ध था। दक्षिणी पूर्वी एशिया के कम्बोज, चम्पा आदि कितने ही उपनिवेशों की स्थापना भारतीयों द्वारा की गई थी।''[1]

प्रसाद की 'आकाशदीप' कहानी में भारतीयों द्वारा दक्षिणी पूर्वी एशिया द्वीप–समूह पर प्रभुत्व स्थापना के साथ–साथ 'चंपा' द्वीप पर उपनिवेश स्थापित करने का उल्लेख मिलता है। इस कहानी में प्रसाद ने लिखा है–

"जो तुम्हारे लिए नये द्वीप की सृष्टि कर सकता है, नई प्रजा खोज सकता है, नये राज्य बना सकता है, उसकी परीक्षा लेकर देखो तो....।"[2] जब इसका कोई नाम नहीं है तो हम लोग इसे चम्पा द्वीप कहेंगे।''[3] इस प्रकार प्रसाद ने चम्पा (वियतनाम) में भारतीयों द्वारा उपनिवेश स्थापित करने का उल्लेख किया है, यह इतिहास सम्मत है। ''चम्पा के हिन्दू राज्य की स्थापना ईसा की दूसरी अथवा तीसरी शती में हुई।

प्रारम्भिक शासको में भद्रवर्मन का नाम प्रसिद्ध है। उसके राज्य में आधुनिक 'अन्नाम' सम्मिलित था। उसने अपने राज्य का विभाजन तीन प्रांतों में किया– अमरावती (उत्तरी प्रांत), विजय (मध्यवर्ती) तथा पाण्डुरंग (दक्षिण)। चीनियों के विरूद्ध भी उसने सफलता प्राप्त की।"[4] प्रसाद ने भद्रवर्मन के स्थान पर बुद्ध गुप्त का उल्लेख किया है जिसने चम्पा (वियतनाम) में उपनिवेश स्थापित कर उसे विशाल साम्राज्य में तब्दील कर दिया था। वे संकेत करते हैं– ''अब तो बाली, जावा और सुमात्रा का वाणिज्य केवल तुम्हारे ही अधिकार में है– महानाविक! महानाविक बुद्धगुप्त की आज्ञा सिंधु की लहरें मानती हैं।''[5]

'आकाशदीप' कहानी के पात्र चंपा और बुद्धगुप्त परस्पर परिचय देते हुए कहते हैं "जाह्नवी के तट पर, चंपा नगरी की एक क्षत्रिय बालिका हूँ...... मैं भी ताम्रलिप्ति का एक क्षत्रिय हूँ चम्पा! परन्तु दुर्भाग्य से जलदस्यु बनकर जीवन बिताता हूँ।[6] जाह्नवी के तट पर स्थित चंपा नगरी, अंग राज्य की राजधानी और प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। चंपा और ताम्रलिप्ति के मध्य गंगा नदी के माध्यम से व्यापार होता था। ताम्रलिप्ति बंदरगाह से भारतीय दक्षिण पूर्वी एशिया के साथ प्रारम्भ में व्यापार और धर्म प्रचार के लिए गए और अंततः वहाँ राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहे। "हिन्द–चीन में समुद्र के किनारे–किनारे चम्पा राज्य की स्थापना द्वितीय शती में हुई। यहाँ भी राज्य का चम्पा नाम इसलिए प्रचलित हुआ कि राज्य स्थापित करने वाले हिन्दू चम्पा (भागलपुर) से आये थे।

इन सभी द्वीपों का सम्मिलित नाम अंग द्वीप कदाचित, इसलिए भी पड़ा हो कि इन द्वीपों में उपनिवेश बसाने वाले लोग अंग, बंग और कलिंग से जाते रहे हों।''[7] 'आकाशदीप' में जावा, बाली, बोर्नियो, चंपा, ताम्रलिप्ति, सिंहल आदि का उल्लेख हुआ है। प्रसाद ने घटनाओं में कल्पना के रंग अवश्य भरे हैं किन्तु ऐतिहासिक परिवेश निर्मित करने में वे सफल रहे हैं। कहानी में सामुद्रिक जीवन की झाँकियाँ प्रस्तुत करते हुए, जलदस्युओं का उल्लेख है जो प्राचीन भारतीय इतिहास का सच है। आज भी जलदस्युओं की कहीं–कहीं उपस्थिति वाणिज्य और व्यापार के लिए खतरा है।

'आकाशदीप' में चंपा में उपनिवेश स्थापित कर 'बुद्धगुप्त' भारत वापस लौटता है किंतु इसका ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं है। उल्लेख मिलता है कि "भद्रवर्मा का उत्तराधिकारी गंगाराज (413 से 415 ई. तक) था। उसके शासनकाल में चंपा में अव्यवस्था फैल गयी, और वह राजसिंहासन का परित्याग कर गंगावास के लिए भारत चला आया।"[8] यह चंपा के अभिलेखों में उल्लिखित है। प्रसाद ने भद्रवर्मा और गंगाराज को मिलाया है। यद्यपि गंगराज और बुद्धगुप्त की वापसी के कारण भिन्न हैं।

गंगाराज चंपा में अव्यवस्था फैलने पर भारत प्रवास करता है जबकि प्रसाद के अनुसार बुद्धगुप्त चंपा में राज्य स्थापना करता है। जो भी हो चंपा में भारतीयों द्वारा हिन्दू राज्य की स्थापना की जाती है, यह ऐतिहासिक तथ्य है। चंपा के प्रथम सम्राट को लेकर इतिहास मौन है, वह बुद्धगुप्त भी हो सकता या कोई अन्य राजा भी।

स्पष्ट है कि चंपा जैसे "उपनिवेशों का इतिहास इस लोकप्रिय विश्वास के छिछलेपन को व्यक्त करता है कि हिन्दू धर्म को विदेशी नहीं अपना सकते और यह केवल उन्हीं लोगों के लिए है, जो इस धर्म में पैदा होते हैं। यह उस महान शक्ति को व्यक्त करता है, जिसके साथ यह विदेशी संस्कृति को अपने में मिलाकर सबल बना सकता है और सबसे आदिम नस्लों को

भी संस्कृति और सभ्यता के उच्चतर स्तर पर ले जा सकता है। यदि हम याद करें कि भारतीय संस्कृति और सभ्यता ने ऐसा ही काम शायद कुछ कम अंश में पश्चिमी, मध्य और पूर्वी एशिया में किया, तो हम भारत के यथार्थ महत्व के एक पहलू को जान सकते हैं, जिस पर सर्वदा उचित रूप से जोर नहीं दिया गया। भारत का औपनिवेशिक और सांस्कृतिक विस्तार भारतीय इतिहास की सबसे उज्ज्वल, किंतु विस्मृत, कहानियों में से एक है, जिसके गौरव को कोई भी भारतीय न्यायतः अनुभव करेगा।''[9] प्रसाद का उद्देश्य इस पक्ष को उद्घाटित करना रहा है।

चंपा में साम्राज्य स्थापित करने के पश्चात बुद्धगुप्त को प्रसाद ने भारत लौटते हुए दिखाया है "एक दिन स्वर्ण रहस्य के प्रभात में चम्पा ने अपने द्वीप स्तम्भ पर से देखा– सामुद्रिक नावों की एक श्रेणी चम्पा का उपकूल छोड़कर पश्चिम–उत्तर की ओर महा जल–व्याल के समान सन्तरण कर रही है।[10] ''यहाँ पश्चिम उत्तर की ओर से तात्पर्य भारतवर्ष से है। प्रसाद यहाँ स्पष्ट कर रहे हैं कि दक्षिणी पूर्वी एशिया में स्थित चंपा से भारत की भौगोलिक स्थिति पश्चिम उत्तर में पड़ती है। वे यह भी संकेत करते हैं कि चंपा के हिन्दू राजा अक्सर हिन्दुस्तान भी आते–जाते रहे होंगे अथवा चंपा और हिन्दुस्तान में परस्पर सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंध भी रहे थे।

प्रसाद ने चंपा के शासक को 'महानाविक' की उपाधि प्रदान की है और शासन की समस्त शक्तियाँ उसमें निहित बताई हैं।[11] "महानाविक बुद्ध गुप्त की आज्ञा सिन्धु की लहरें मानती हैं।''[12] इस से भारतीय शासकों का समुद्र पर आधिपत्य संकेतित होता है। बाली, जावा और सुमात्रा का वाणिज्य भी भारतीय शासकों के अधिकार में था। राजा सर्वोच्च होते थे किंतु जनता की भावनाओं का उन्हें ध्यान रखना पड़ता था। इन उपनिवेशों की न्याय व्यवस्था भी लगभग भारतीय परम्पराओं और सिद्धांतों पर आश्रित थी, राजा ही सर्वोच्च न्यायाधीश भी होता था। दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों और उनके उपनिवेशों का समाज भी संभवतः भारतीय समाज की भांति चार वर्णों

(1) ब्राह्मण
(2) क्षत्रिय
(3) वैश्य और
(4) शूद्र में विभाजित था।

प्रसाद ने चंपा और बुद्ध गुप्त को क्षत्रिय वर्ण का बताया है – ''मैं चम्पा नगरी की एक क्षत्रिय बालिका हूँ। मै भी ताम्रलिपि का एक क्षत्रिय हूँ चम्पा !''[13] यहाँ क्षत्रियत्व से प्रसाद वर्ण–श्रेष्ठता को प्रतिष्ठित नहीं करना चाहते बल्कि चम्पा और बुद्धगुप्त दोनों का क्षत्रिय होना उनकी कहानी में चित्रित इनके व्यक्तित्व को ठोस आधार देने के लिए प्रयुक्त युक्ति है।

प्रसाद ने इसी कहानी में वणिक वर्ग अथवा वैश्य वर्ग का जिक्र किया है। वे लिखते हैं–'सिंहल के वणिकों का वहाँ प्राधान्य है।''[14] कहानी में धीवरों का उल्लेख भी है–"दूर–दूर से धीवरों का वंशी झनकार उनके संगीत–सा मुखरित होता था।''[15] इन पारंपरिक वर्णों के अतिरिक्त प्रसाद ने चंपा में दास प्रथा का भी उल्लेख किया है। यद्यपि दास प्रथा के स्वरूप का विस्तृत वर्णन नहीं मिलता किंतु दास–दासियों की उपस्थिति की ओर प्रसाद ने संकेत किया है– ''क्षीरनिधिशायी अनंत की प्रसन्नता के लिए क्या दासियों से आकाश–दीप जलवा दूँ?''[16]

भारतीय संस्कृति का मूलतत्त्व लोक–विश्वास हैं और प्रसाद ने इन लोक–विश्वासों को अपने कथा–साहित्य में यथोचित स्थान प्रदान किया है। गंगा किनारे आकाशदीप जलाना प्रसाद की कर्म भूमि बनारस का लोक–विश्वास भी है। कहानी में चम्पा के साथ यह विश्वास चम्पा–द्वीप (वियतनाम) जाता है और इससे भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रचार–प्रसार होता है।

दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों के समाज में दूसरी एवं तीसरी सदी में नारी की स्थिति सम्मानजनक थी। ''स्त्रियों को पर्याप्त स्वतंत्रता थी।''[17] विवाह पवित्र धार्मिक संस्कार था स्त्री को वर चुनने का अधिकार था। चंपा भी वर चुनने के अधिकार के फलस्वरूप बुद्धगुप्त के विवाह प्रस्ताव को अस्वीकार करती हुई कहती है– "प्रिय नाविक! तुम स्वदेश लौट जाओ, विभवों का सुख भोगने के लिए, और मुझे छोड़ दो इन निरीह भोले–भाले प्राणियों के दुःख की सहानुभूति और सेवा के लिए।''[18]

ऐसा प्रतीत होता है कि भारत की अपेक्षा चम्पा में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति अधिक अच्छी थी। सती प्रथा वहाँ विद्यमान थी किंतु पर्दा प्रथा नहीं थी। भारतीयों के संपर्क में आने से पूर्व यहाँ के लोग प्रायः असभ्य थे। आकाशदीप कहानी में भी इस और संकेत है ''एक श्यामा युवती सामने आकर खड़ी हुई। वह जंगली थी। नील नभोमण्डल से मुख में शुद्ध नक्षत्रों की पंक्ति के समान उसके दांत हँसते ही रहते। वह चम्पा को रानी कहती, बुद्धगुप्त की आज्ञा थी।''[19]

प्रसाद ने चंपा में ब्राह्मण धर्म के प्रसार का जिक्र किया है। शैव धर्म यहाँ सबसे ज्यादा प्रचलित हुआ और इसे वहाँ का राजधर्म घोषित किया गया था। प्रसाद ने भी चंपा में उक्त देवी–देवताओं के अस्तित्व और उनकी पूजा अर्चना होने के संदर्भ प्रस्तुत किये हैं– ''वरूण देव की शपथ[20] अथवा चम्पा! हम लोग जन्मभूमि–भारतवर्ष से कितनी दूर इन निरीह प्राणियों में इन्द्र और शची के समान पूजित हैं।''[21] भारत की धार्मिक परम्पराएँ, संस्कार एवं लोक–विश्वास भी यहाँ प्रचलित हुए। दीपदान और आकाशदीप जैसे लोक–विश्वास भारत की अति प्रचलित परम्पराएँ रही हैं।

चंपा आकाशदीप की परम्परा और महत्त्व को स्पष्ट करती हुई कहती है कि मुझे स्मरण है जब मै छोटी थी, मेरे पिता नौकरी पर समुद्र में जाते थे– मेरी माता, मिट्टी का दीपक बांस की पिटारी में भागीरथी के तट पर बांस के साथ ऊँचे टांग देती थी। उस समय वह प्रार्थना करती– भगवान! मेरे पथ–भ्रष्ट नाविक को अंधकार में ठीक पथ पर ले चलना और जब मेरे पिता बरसों पर लौटते तो कहते– साध्वी! तेरी प्रार्थना से भगवान ने भयानक संकटों में मेरी रक्षा की है।''[22] लोक–विश्वासों की इन

भारतीय परंपरा को चंपा सुदूर दक्षिण पूर्व में स्थित चंपा द्वीप में स्थापित कर दीपकोत्सव मनाती है। ''शैल के एक ऊँचे शिखर पर चम्पा के नाविकों को सावधान करने के लिए सुदृढ़ दीप–स्तम्भ बनवाया गया था। आज उसी का महोत्सव है।''[23]

जयशंकर प्रसाद ने चंपा में तमाम देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना होने के बावजूद अनीश्वरवादी मतानुयायियों का भी उल्लेख किया है। उन्हें प्रताड़ना देते हुए कहा है कि ''तुम भगवान के नाम पर हँसी उड़ाते हो। मेरे आकाश–दीप पर व्यंग्य कर रहे हो। नाविक! उस प्रचण्ड आँधी में प्रकाश की एक–एक किरण के लिए हम लोग कितने व्याकुल थे।''[24] संभवतः चंपा के दृढ़ धार्मिक विश्वास एवं आस्था ने बुद्धगुप्त को भी शनैः शनैः आस्तिक बना दिया था।

रामधारी सिंह दिनकर[25] ने भी इन देशों में प्रचलित रिवाजों के आधार पर यहाँ भारतीय संस्कृति की प्रधानता की और संकेत किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 सत्यकेतु विद्यालंकार, भारतीय संस्कृति का विकास, पृ. 294, 2000, दिल्ली। 2 जयशंकर प्रसाद, (आकाशदीप कहानी),आकाशदीप, पृ. 15, 2001, जयपुर। 3 जयशंकर प्रसाद, (आकाशदीप कहानी), आकाशदीप, पृ. 15, 2001, जयपुर। 4 के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति, पृ. 925, 2002, इलाहाबाद। 5 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 13,18, 2001, जयपुर। 6 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 10,11, 2001, जयपुर। 7 रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 177, 2006, इलाहाबाद। 8 सत्यकेतु विद्यालंकार, भारतीय संस्कृति का विकास, पृ. 299, 2000, दिल्ली। 9 मजुमदार, रायचौधरी, दत्त, भारत का बृहत् इतिहास, पृ.192, 1991, मद्रास। 10 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 19, 2001, जयपुर 1 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 11, 2001, जयपुर। 2 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 11, 2001, जयपुर। 3 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 10, 2001, जयपुर। 4 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 11, 2001, जयपुर। 5 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 11, 2001, जयपुर। 6 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 11, 2001, जयपुर। 7 के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, पृ. 927, 2002, इलाहाबाद। 8 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 16, 2001, जयपुर। 9 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 11, 2001, जयपुर। 10 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 9, 2001, जयपुर। 11 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 15, 2001, जयपुर। 12 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 12–14, 2001, जयपुर। 13 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 15, 2001, जयपुर। 14 जयशंकर प्रसाद, आकाशदीप कहानी, आकाशदीप, पृ. 12, 2001, जयपुर। 15 रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 177, 2006,